Date
Page

हंस और कछुआ

मगाध देश में फुल्लोत्पल नामन एक तालाब था जिसमे दो हंस रहते थे। उनका नाम संकट और विकट था। उस तालाब मे एक कछुआ और बहुत सारी मछलियाँ भी रहती थी।

एक दिन कुछ मछुआरे उस तालाब के पास से गुजर रहे थे। उनकी नजर उन मछलियों पर पड़ी और उन्होंने यह तय किया की अगले दिन आकर वे इन मछलियों को पकड़कर ले जाएंगे। मछुआरों की बात हंसो ने सुन ली थी। और वह दोनो जाकर मछलियो और कछुए को यह बात बतादी। कछुआ यह सुनकर डर गया और बचाव के उपाये सोचने लगा। जल्द ही उसे एक उपाय सुजा। उसने हंसो से जाकर यह कहा की वह दोनो उसे वहा से ले जाए। हंसो ने एक लकड़ी लाकर कछुए को कहा की वह उसे अपने मुहँ से लकडी के बीच से पकड़े और वह दोनो लकड़ी के कीनारे पकड़कर उसे उड़ा ले जाएंगे। हंसो ने कछुए को चेतावनी दी थी की अगर वह अपना मुँह खोलेगा तो वह गिर जाएगा। फिर हंस उड़ चले। कुछ देर बाद वे एक गाँव से गुजरे। सारे लोग आसमान की तरफ देखने लगे। उड़ते कछुए को देखकर लोग अश्चर्य चकित रहगए। लोग कछुए के बारे मे उलटा सीधा

बोलने लगे। यह सुनकर कछुए से रहा नही गया और वह अपना संयम खो बैठा और उन्हे जवाब देने के लिए अपना मुँह खोल दिया। लकड़ी उसके मुह से छुट गयी और वह नीचे हाड़ाम से जमीन पर गीर पड़ा।

यह विशय से हमे यह सिख मिलती है की हमे हमेशा बोलने से पहले सोचना चाहिए और ज्यादा बात नही करना चाहिए।

~o~o~